काव्य प्रमोद

पाठ्य–पुस्तक

बी.ए., बी.एफ.ए., बी.म्यूज़िक

द्वितीय सेमिस्टर

B.A., B.F.A., B. MUSIC

II SEMESTER

चयन आधारित क्रेडिट पद्धति

C.B.C.S.

–संपादक–

डॉ. मंजुश्री मैनन

डॉ. प्रवीण महाबलेश्वर आनंदकंद

ಬೆಂಗಳೂರು
ಕೇಂದ್ರ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ
BENGALURU
CENTRAL UNIVERSITY
ಆರು ನೀ ಅನಕೇತನ
BE BOUNDLESS

प्रसारांग

बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय

बेंगलूरु – 560 001

KAVYA PRAMOD :

Edited by Dr. Manjushree Menon and Dr. Praveen Mahabaleshwar Anandakanda.

Published by
Prasaraang, Bangalore Central University,
Bangalore – 560001.

pp. 37+viii

© बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय

प्रथम संस्करण – २०१९

संपादक :
डॉ. मंजुश्री मैनन
डॉ. प्रवीण महाबलेश्वर आनंदकंद

प्रकाशक :
प्रसारांग
बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय,
बेंगलूरु–560 001.

भूमिका

बेंगलूरु विश्वविद्यालय 2014-15 शैक्षणिक वर्ष से सेमिस्टर पद्धति से सी.बी.सी.एस. स्कीम स्नातक वर्ग के लिए चला रहा है, किन्तु बेंगलूरु विश्वविद्यालय के त्रिभाजन के फलस्वरूप "बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय" की ओर से आगामी 2019-2020, 2020-2021 तथा 2021-2022 शैक्षणिक वर्षों के लिए नवीन पाठ्यक्रम का निर्माण भी उपर्युक्त आधार पर ही स्नातक वर्ग हेतु किया गया है।

इस पृष्ठभूमि में हिन्दी–अध्ययन–मण्डल ने विभागाध्यक्ष डॉ. शेखर जी के मार्गदर्शन में पाठ्य–पुस्तक का निर्माण किया है।

संपादक–मण्डल का विश्वास है कि यह पद्य–संकलन छात्र–समुदाय के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। इस पाठ्य–पुस्तक के निर्माण में सहयोग देनेवाले सभी के प्रति विश्वविद्यालय आभारी है।

इस संकलन को अल्प समय में सुन्दर रुप से छापने वाले प्रसारांग, बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के प्रति भी हम आभारी हैं।

प्रो. जाफट. एस
कुलपति
बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय
बेंगलूरु

प्रकाशक की बात

बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय ने स्नातक–वर्गों के लिए सेमिस्टर पद्धति (सी.बी.सी.एस) लागू किया है, उसके अनुसार हिन्दी–अध्ययन–मण्डल ने अपने विभागाध्यक्ष के मार्गदर्शन में पाठ्य–पुस्तक का निर्माण किया है।

पाठ्य–पुस्तक को समय पर तैयार करने में डॉ. मंजुश्री मैनन जी तथा डॉ. प्रवीण महाबलेश्वर आनंदकंदा जी ने बड़ा सहयोग दिया है। उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

विश्वविद्यालय की ओर से पाठ्य–पुस्तकों को प्रकाशित कराने में कुलपति प्रो. जाफट. एस जी ने अत्यन्त उत्साह दिखाया है । एतदर्थ मैं उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ । इस पुस्तक को सुन्दर रुप से छापने वाले मुद्रणालय के कर्मचारियों के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

प्रसारांग
बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय
बेंगलूरु

अध्यक्ष की बात

बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय शैक्षणिक क्षेत्र में नये–नये विषयों को अपने अध्ययन की सीमा में ले रहा है। अध्ययन को आज के संदर्भ के अनुसार प्रस्तुत करने का प्रयत्न हो रहा है । साहित्यिक विषयों को आज की बदलती परिस्थितियों के अनुसार रुपित करने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम को प्रस्तुत किया जा रहा है।

सेमिस्टर पद्धति (सी.बी.सी.एस) के अनुकूल स्नातक वर्गों के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। इस पाठ्य–पुस्तक के निर्माण में सहयोग देनेवाले संपादकों के प्रति मैं आभारी हूँ।

इन नये पाठ्य–पुस्तकों के निर्माण में कुलपति महोदय प्रो. जाफट. एस. जी ने अत्यधिक प्रोत्साहन दिया, एतदर्थ मैं इनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

पुस्तक के प्रकाशक, प्रसारांग, बेंगलूरु केन्द्र विश्विद्यालय के सभी कर्मचारियों के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

डॉ. शेखर
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
बेंगलूरु विश्वविद्यालय

संपादक की कलम से . . .

साहित्य किसी समाज को समझने–परखने और अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम होता है । इसलिए साहित्य और समाज के विविध सरोकारों पर चर्चाएँ होती रहती हैं और भिन्न–भिन्न कसौटियों पर इसके मूल्यांकन भी होते रहते हैं । प्रत्येक रचनाकार के पास एक बिम्ब होता है, जिसमें वह जीता है और लगातार अपने युग विशेष की परिस्थितियों से संघर्षरत रहता है, उनसे प्रभावित होता है और उन्हें प्रभावित भी करता है ।

हिन्दी साहित्य का आरंभ करने वाले सिद्ध और नाथ पंथी योगी समस्त भारत में घूम–घूम कर अपने काव्यों के माध्यम से आठवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक राष्ट्र की एकता का प्रचार–प्रसार करते रहे । उन्होंने एक भाषा तैयार की जिसमें भारत की सभी क्षेत्रीय भाषाओं के बहु प्रचलित शब्दों के प्रवेश का द्वार खुला । इन्हीं सिद्ध और नाथ पंथियों के प्रयास से उस भाषा का विकास हुआ, जिसे कालान्तर में या आज हिन्दी कहा जाता है ।

वीर गाथा काल से लेकर आधुनिक काल की खड़ी बोली तक कई कवियों ने हिन्दी पद्य साहित्य को समृद्ध किया है । लेकिन भूमंडलीकरण, निजीकरण, व्यावसायिकता और बाज़ारवाद के इस युग में साहित्य की प्रासंगिकता लुप्त न हो जाये, इसलिए युवापीढ़ी के उस वर्ग के समक्ष

साहित्यिक विचार रखने का प्रयास किया गया है, जो बदलते हुए परिवेश से आधुनिक प्रभावित है। यकीनन युवापीढ़ी की सोच बदल रही है और उनके पैरों तले ज़मीन खिसक रही है, जिसका उन्हें एहसास नहीं हो रहा है। उनमें एक सतही मानसिकता पनप रही है, जिसके कारण सार्थक जीवन मूल्यों से उनके भटकने की संभावना बढ़ गयी है। इस संदर्भ में यह आत्यावश्यक है कि उनमें अपने देश, समाज और साहित्य के प्रति ज़िम्मेदारी निभाने की सोच विकसित हो।

प्रस्तुत द्वितीय सेमिस्टर बी.ए के पाठ्य पुस्तक 'काव्य प्रमोद' में निहित प्रत्येक कविता किसी–न–किसी रस की अनुभूति अवश्य कराएगी जो भावनाओं से ओतप्रोत है।

प्रस्तुत संकलन में जिन कवियों की कविताएँ संग्रहीत हैं, उनके प्रति हम आभारी हैं। आशा करते हैं कि प्रस्तुत पुस्तक विद्यार्थियों में सामाजिक सरोकार की भावना के साथ–साथ उन में मानवीय मूल्यों को भी प्रबल करने में सक्षम होगी।

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

1. **दोहे** 01
   – बिहारी
2. **छंद** 03
   – भूषण
3. **अभिशाप** 05
   – मैथिलीशरण गुप्त
4. **आँख का आँसू** 08
   – अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
5. **चित्रकूट** 10
   – रामेश्वर दयाल दुबे
6. **कोई अर्थ नहीं** 12
   – रामधारी सिंह 'दिनकर'
7. **जलियाँवाला बाग़ में वसंत** 14
   – सुभद्राकुमारी चौहान
8. **पथ की पहचान** 16
   – डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन'
9. **घृणा का गान** 18
   – सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

कवि परिचय और कठिन शब्दार्थ 20

पारिभाषिक शब्दावली 35

1–दोहे

–बिहारी

1) लोने मुख डीठी न लगै, यों कहि दीनों ईठि ।
दूनी ह्वै लागन लगी, दिये डिठौना दीठि ॥

2) दीरघ साँस न लेहि दुख, सुख साई नहिं भूल ।
दई दई क्यों करत है, दई दई सु कबूल ॥

3) बड़े न हूजै गुनन बिन, बिरद बड़ाई पाय ।
कहत धतूरे सों कनक, गहनो गढ़ो न जाय ॥

4) संगति सुमति न पावहीं, परे कुमति के धंध ।
राखो मेलि कपूर में, हींग न होत सुगंध ॥

5) सीस मुकुट, कटि काछनी, कर मुरली, उर माल ।
यहि बानिक मो मन बसो सदा बिहारीलाल ॥

6) जो चाहो चटक न घटे, मैलौ होय न मित्त ।
रज राजस न छुवाइये, नेह चीकने चित्त ॥

7) अति अगाध अति औथरे, नदी कूप सर बाय ।
जो ताको सागर जहाँ, जाकि प्यास बुझाय ॥

8) दूरि भजत प्रभु पीठी दै, गुन बिस्तारन काल ।
प्रकटत निर्गुन निकट ही, चंग रंग गोपाल ॥

9) मीत न नीति गलीत ह्वै, जो धरिये धन जोरि ।
खाये खरचे जो बचै, तो जोरिये करोरि ॥

10) लोपे कोपे इन्द्र लौं, रोपे प्रलय अकाल ।
गिरिधारी राखै सबै गौ, गोपी, गोपाल ॥

2–छंद

–भूषण

1) साहि तनै सरजा तव द्वार प्रतिच्छन दान की दुंदुभि बाजे।
भूषन भिच्छुक भीरन को अति भोजहु तें बढि मौजनि साजै ॥
राजन को गन, राजन ! को गनै ? साहिन मैं न इती छबि छाजै।
आजु गरीबनेवाज़ मही पर तो सो तुही सिवराज बिराजै ॥

2) साजी चतुरंग बीर रंग में तुरंग चढ़ी,
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है ।
'भूषण' भनत नाद बिहद नगारन के
नदी–नद मद गैबरन के रलत है ॥
ऐल–फैल खैल–भैल खलक में गैल–गैल,
गजन की ठेल–पेल सैल उसलत है ।
तारा सो तरनि धुरि धारा मैं लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है ॥

3) पीरी पीरी हुन्नै तुम देत हो मंगाय हमें,
सुवरन हम सों परखि करि लेत हौ ।
एक पल ही में लाख रुखन सों लेत लोग,
तुम राजा ह्वै कै लाख दीबे को सचेत हौ ॥
भूषन भनत महाराज सिवराज बड़े,
दानी दुनी ऊपर कहाए केहि हेत हौ ?
रीझि हँसी हाथी हमें सब कोऊ देत,
कहा रीझि हँसि हाथी एक तुमहिये देत हौ ॥

4) ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी,
ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं ॥
कंदमूल भोग करैं कंदमूल भोग करें,
तीन बेर खाती ते वै तीन खाती हैं ॥
भूषन सिथिल अंग भूषन सिथिल अंग,
बिजन डुलाती ते वै बिजन डुलाती हैं ।
'भूषन' भनत सिवराज बीर तेरे त्रास,
नगन जड़ाती ते वे नगन जड़ाती हैं ॥

3–अभिशाप

–मैथिलीशरण गुप्त

शांति– स्थान महान कण्व मुनि के पुण्यश्रमोद्यान में,
बाह्यज्ञान–विहीन, लीन अति ही दुष्यन्त के ध्यान में,
बैठी मौन शकुन्तला सहज थी सौन्दर्य से सोहती,
मानो होकर चित्र में खचित–सी थी चित्त को मोहती।

ऐसे अद्‌भुत ध्यान के समय में, 'विख्यात क्रोधी महा'–
दुर्वासा मुनिवर्य्य धीर गति से दैवात् पधारे वहाँ।
तेजोवन्त शरीर शुद्ध उनका अत्यन्त ही कान्त था,
मार्तण्डोपम वक्त्रमण्डल तथा उद्दण्ड भी शान्त था।

दीर्घश्मश्रु जटा–समेत उनके थे केश सारे सित,
होता था मुख दीप्तिमान उनसे यों सर्वदा शोभित।
होके मुक्त नितान्त मेघ गण से वर्षान्त ज्यों रवि–
पाता रश्मि–समूह संयुत सदा तेजोमयी है छवि।

होने से प्रिय प्रेम मुग्ध उसने आते न जाना उन्हें,
वैसी ही अतएव निश्चल रही मानो न माना उन्हें !
चिन्ता से जिसको न आप अपने देहादि का ज्ञान हो–
क्या आश्चर्य, न और का यदि उसे आते हुए ध्यान हो !

आया जान उन्हें, उसे पवन भी मानो जगाने लगी,
खींचा वस्त्र अनेक बार उसने, तो भी न बाला जगी।
थी प्यारे पति के समीप वह तो कैसे भला जागती ?
तन्द्रा निश्चल प्रेम की सहज ही बोलो कैसे त्यागती ?

माना किन्तु महापमान अपना जी में उन्होंने इसे,
क्रोधाधिक्य विचारयुक्त रखता संसार में है किसे ?
होते खिन्न कदापि वे न सहसा यों सोचते जो कहीं,
'होता है मन एक ही मनुज के दो चार होते नहीं।'

होके रुष्ट अत: अतीव मन में पाके वृथा ताप वे,
कर्ण क्रूर कठोर कण्व–रव से देने लगे शाप वे।
बोले शीघ्र पसार पाणि अपना, यों रुक्ष–वाणी निरी–
ज्यों वाताहत मेघ से उपज की धारा धरा पै गिरी।

'चिन्ता में जिसकी निमग्न रहके देखा न तूने मुझे ;
स्वामी मैं तप का, तथापि कुछ भी लेखा न तूने मुझे।
आवेगा तव–ध्यान ही न उसको, कोई कहे भी न क्यों ;
पीछे पूर्व–कथा–प्रमत्त जन को है याद आती न ज्यों।"

यों क्रोधान्ध, विचार–शून्य मुनि ने अत्युग्रता से कहा,
तो भी ध्यान हुआ न भंग उसका सो पूर्व–सा ही रहा।
वर्षा में प्रिय चन्द्र–दर्शन–रता होती चकोरी जहाँ–

मेघों की घोषणा तब उसे देती सुनाई कहाँ ?

थीं दोनों सखियाँ समीप वन में, उत्फुल्ल मालोपमा ;
दौड़ीं वे सुन शाप और मुनि से माँगी उन्होंने क्षमा।
होके शान्त किसी प्रकार तब वे बोले यही अन्त को–
"आवेगी सुध मुद्रिका निरख के उद्भ्रान्त दुष्यन्त को।"

4–आँख का आँसू

–अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

आँख का आँसू ढलकता देखकर
जी तड़प कर के हमारा रह गया
क्या गया मोती किसी का है बिखर
या हुआ पैदा रतन कोई नया ?

ओस की बूँदें कमल पे है कहीं
या उगलती बँदे हैं दो मछलियाँ
या अनूठी गोलियाँ चांदी मढ़ी
खेलती हैं खंजनों की लड़कियाँ।

या जिगर पर जो फफोला था पड़ा
फूट कर के वह अचानक बह गया
हाय था अरमान, जो इतना बड़ा
आज वह कुछ बूँद बन कर रह गया।

पूछते हो तो कहो मैं क्या कहूँ
यों किसी का है निराला पन भया
दर्द से मेरे कलेजे का लहू
देखता हूँ आज पानी बन गया।

प्यास थी इस आँख को जिसकी बनी
वह नहीं इस को सका कोई पिला
प्यास जिससे हो गयी है सौगुनी
वाह क्या अच्छा इसे पानी मिला।

ठीक कर लो जांच लो धोखा न हो
वह समझते हैं सफर करना इसे
आँख के आँसू निकल करके कहो
चाहते हो प्यार जतलाना किसे ?

आँख के आँसू समझ लो बात यह
आन पर अपनी रहो तुम मत अड़े
क्यों कोई देगा तुम्हें दिल में जगह
जब कि दिल में से निकल तुम यों पड़े।

हो गया कैसा निराला यह सितम
भेद सारा खोल क्यों तुमने दिया
यों किसी का है नहीं खोते भरम
आँसुओं, तुमने कहो यह क्या किया ?

5–चित्रकूट

–रामेश्वर दयाल दुबे

मिला कौन संदेश धरा को कण–कण सहसा पुलकित।
वनराजी हँस रही, सुमन खिलते, कलियाँ भी मुकुलित॥

नयी चहक भर गई खगों में, मृग में है चंचल गति।
बनी बावली वायु घूमती खोकर अपनी गति–मति॥

उत्कंठित तरु–शिखर उचक कर किसको देख रहे हैं ?
शाखामृग शाखाओं में क्यों उत्सुक लपक रहे हैं ?

मंदाकिनी की लोल लहरियाँ क्यों श्रृंगार सजातीं ?
जलचर चपल विशेष सफरियाँ उछल–उछल क्यों जातीं ?

कामदगिरि के शिखर दूर पर अपनी दृष्टी गड़ाये।
बाट जोहते किसकी हैं ये सुध–बुध सकल गँवाये॥

श्रृंगों पर आसीन वारिदों में वह कैसी हलचल ?
सिहर रहे क्यों गुल्म, बन रहे सारे तरु क्यों चलदल ?

यह उमंग उल्लास सहज की कण–कण पर क्यों छाया ?
प्रकृति नटी ने किसके स्वागत में यह साज सजाया ?

सुरभि बाँटता घूम रहा है अनिल चपल बालक–सा।
चातक , कीर , मयूर शब्दरत, लगता कुछ उत्सव–सा ॥

ऊँचे तरु पर लो मयूर वह 'कुहा'–'कुहा' कर बोला।
दूर क्षितिज पर देख श्यामघन उसने निज मुख खोला ॥

6–कोई अर्थ नहीं

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

नित जीवन के संघर्षों से
जब टूट चुका हो अन्तर्मन,
तब सुख के मिले समन्दर का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ॥

जब फसल सूख कर जल के बिन
तिनका–तिनका बन गिर जाये,
फिर होने वाली वर्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ॥

सम्बन्ध कोई भी हों लेकिन
यदि दुःख में साथ न दें, अपना,
फिर सुख में उन सम्बन्धों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ॥

छोटी–छोटी खुशियों के क्षण
निकले जाते हैं रोज़ जहाँ,
फिर सुख की नित्य प्रतीक्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ॥

मन कटुवाणी से आहत हो
भीतर तक छलनी हो जाये,
फिर बाद कहे प्रिय वचनों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ॥

सुख–साधन चाहे जितने हों
पर काया रोगों का घर हो,
फिर उन अगनित सुविधाओं का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ॥

7–जलियाँवाला बाग में वसंत

–श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते।
काले–काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते॥
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक–कुल से।
वे पौधे, व पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे॥

परिमल–हीन पराग दाग–सा बना पड़ा है।
हा ! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है॥
आओ प्रिय ऋतुराज ! किन्तु धीरे से आना।
यह है शोक–स्थान यहाँ मत शोर मचाना॥

वायु चले पर मन्द चाल से उसे चलाना।
दुख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना॥
कोकिल गावे, किन्तु राग रोने का गावे।
भ्रमर करे गुंजार, कष्ट की कथा सुनावे॥

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले।
हो सुगन्ध भी मन्द, ओस से कुछ–कुछ गीले॥
किन्तु न तुम उपहार – भाव आकर दरसाना।
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना॥

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा–खाकर।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर॥
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं।
अपने प्रिय–परिवार देश से भिन्न हुए हैं॥

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इस लिए चढ़ाना।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना॥
तड़प–तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर॥

यह सब करना, किन्तु
बहुत धीरे – से आना।
यह है शोक – स्थान
यहाँ मत शोर मचाना॥

8–पथ की पहचान

– डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन'

पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।
पुस्तकों में है नहीं छापी गयी इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता है न औरों की ज़बानी,
अनगिनत राही गए इस राह से, उनका पता क्या,
पर गये कुछ लोग इसपर छोड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पन्थी, पन्थ का अनुमान कर ले,
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

है अनिश्चित किस जगह पर सरित, गिरि, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित किस जगह पर बाग, बन सुन्दर मिलेंगे,
किस जगह यात्रा खतम हो जाएगी, यह भी अनिश्चित,
है अनिश्चित कब सुमन, कब कंटकों के शर मिलेंगे,
कौन सहसा छूट जाएँगे, मिलेंगे कौन सहसा
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा तू न, ऐसी आन कर ले,
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

कौन कहता है कि स्वप्नों को न आने दे हृदय में, ह
देखते सब हैं इन्हें अपनी उमर, अपने समय में,
और तू कर यत्न भी तो, मिल नहीं सकती सफलता,

ये उदय होते लिए कुछ ध्येय नयनों के निलय में,
किन्तु जग लें पंथ पर यदि, स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर हो मुग्ध मत हो, सत्य का भी ज्ञान कर ले,
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

स्वप्न आता स्वर्ग का, दृग–कोरकों में दीप्ति आती,
पंख लग जाते पगों को, ललकती उन्मुक्त छाती,
रास्ते का एक काँटा, पाँव का दिल चीर देता,
रक्त की दो बूँद गिरती, एक दुनिया डूब जाती,
आँख में हो स्वर्ग लेकिन पाँव पृथ्वी पर टिके हों,
कंटकों की इस अनोखी सीख का सम्मान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

यह बुरा है या कि अच्छा, व्यर्थ दिन इस पर बिताना,
जब असंभव छोड़ यह पथ दूसरे पर पग बढ़ाना,
तू इसे अच्छा समझ, यात्रा सरल इससे बनेगी !
सोच मत केवल तुझे ही यह पड़ा मन में बिठाना,
हर सफल पंथी यही विश्वास ले इसपर बढ़ा है,
तू इसी पर आज अपने चित का अवधान कर ले,
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

9–घृणा का गान

–सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

सुनो, तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान !
तुम, जो भाई को अछूत कह वस्त्र बचा कर भागे,
तुम, जो बहिनें छोड़ बिलखती, बढ़े जा रहे आगे !
रुक कर उत्तर दो, मेरा है अप्रतिहत आह्वान–
सुनो, तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान !

तुम, जो बड़े–बड़े गद्दों पर ऊँची दुकानों में,
उन्हें कोसते हो जो भूखे मरते हैं खानों में,
तुम, जो रक्त चूस ठठरी को देते हो जल–दान–
सुनो, तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान !

तुम, जो महलों में बैठे दे सकते हो आदेश,
'मरने दो बच्चे, ले आओ खींच पकड़ कर केश !
नहीं देख सकते निर्धन के घर दो मुट्ठी धान
सुनो, तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान !

तुम, जो पा कर शक्ति कलम में हर लेने की प्राण–
'निःशक्तों' की हत्या में कर सकते हो अभिमान !
जिनका मत है, 'नीच मरें, दृढ़ रहे हमारा स्थान'–
सुनो, तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान !

तुम, जो मंदिर में वेदी पर डाल रहे हो फूल,
और इधर कहते जाते हो, 'जीवन क्या है ? धूल !'
तुम, जिस की लोलुपता ने ही धूल किया उद्यान–
सुनो, तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान !

तुम, सत्ताधारी, मानवता के शव पर आसीन,
जीवन के चिर–रिपु, विकास के प्रतिद्वंद्वी प्राचीन,
तुम, श्मशान के देव ! सुनो यह रण–भेरी की तान–
आज तुम्हें ललकार रहा हूँ, सुनो घृणा का गान !

कवि परिचय और कठिन शब्दार्थ

1 – बिहारी

रीतिकाव्य के प्रतिनिधि कवि 'बिहारी' के जन्म एवं जीवन संबंधी प्रामाणिक विवरण का अभाव है । अनुमानत: सन् 1595 में ग्वालियार के पास बसुआ गाविन्दपुर गाँव में 'केशवराय' नामक माथुर चौबे के घर उनका जन्म हुआ था । इनका वैवाहिक जीवन मथुरा तथा आगरा में बीता । फिर वह जयपुर के मिर्ज़ा राजा जयसिंह के दरबारी कवि बन गये जहाँ उन्हें काफी धन एवं सम्मान प्राप्त हुआ । राजा के अनुरोध करने पर उन्होंने सात सौ से कुछ अधिक दोहों की रचना की, जो 'बिहारी सतसई' के नाम से प्रसिद्ध है । इसमें 713 दोहे संकलित हैं । 'सतसई' में ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है । उनके गुरु का नाम 'नरहरिदास' था । महाकवि बिहारी का निधन लगभग 70 वर्ष की आयु में सन् 1664 में हुआ, ऐसा माना जाता है ।

प्रस्तुत दोहों में महाकवि बिहारी ने जीवन के अनुभवों में से दृष्टांत लेकर नैतिक विचार प्रकट किए हैं और अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण के प्रति अपनी आस्था भी व्यक्त की है।

शब्दार्थ :

1) लोने=सुन्दर । डीठि=दृष्टि । ईठि=मित्र या सखी ।

डिठौना=नज़र न लग जाये, इस उद्देश्य से लगाया गया काजल का चिन्ह।

2) दीरघ साँस=लंबी–गहरी साँस। दई दई=दैव–दैव या भाग्य–भाग्य। दई दई=भगवान ने जो दिया है।

3) बिरद=नाम, यश। कनक=सोना और धतूरा।

4) संगति=साथ। सुमति=सुबुद्धि। धन्ध=चक्कर, धन्धा। मोलि=मिलाकर।

5) कटि=कमर। काछनी=धोती। कर=हाथ। बानिक=रूप में।

6) चटक=चमक। मैलो होय न मित्त=मित्रता में मलिनता न आये। रज=धूल। राजस=रौब, हुकुम। नेह=प्रेम।

7) अगाध=गहरे। औथरे=उथले। सर=सरोवर। बाय=बावड़ियाँ।

8) भजत=भागता है। पीठि दे=मुँह मोड़कर। गुन=(1) डोरी (2)अच्छाइयाँ। विस्तारन=फैलाना या बढ़ाना। चंग रंग=पतंग की भाँति।

9) गलीत=दुर्दशाग्रस्त। जोरि=जोड़कर, जमा करके। करोरि=करोड़ों रुपये।

10) लोपे=लुप्त हो जाने पर ; भावार्थ है पूजा बन्द कर दिये जाने पर । कोपे=कुपित, क्रोधित । लौं=तक । शोपे=शुरु करने पर। राखे=रक्षा की।

2–भूषण

कवि भूषण हिंदी की श्रृंगारयुगीन परंपरा में वीर रस का प्रवर्तन करने वाले सर्वश्रेष्ठ कवि थे । उनका जन्म कानपुर जिले में यमुना नदी के किनारे पर तिकवाँपुर नामक गाँव में सं. 1670 में हुआ था। उनके पिता का नाम 'रत्नाकर त्रिपाठी' था। उनका असली नाम कुछ और था। उनकी वीर रस सम्बन्धी कविता का चमत्कार देखकर चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्रराम ने उन्हें "कवि भूषण" की उपाधि प्रदान की थी। भूषण छत्रपति शिवाजी महाराज के दरबारी कवि थे। 'शिवराज भूषण', 'शिवा बावनी', 'छत्रसाल दशक' आदि उनके प्रमुख ग्रन्थ हैं। भूषण ने सारा काव्य ब्रज भाषा में रचा था। उनका निधन सं. 1772 में हुआ ऐसा माना जाता है।

प्रस्तुत पदों में छत्रपति शिवाजी के देशप्रेम, उदारता और वीरता का बखान किया गया है क्योंकि एक ओर जहाँ उन्होंने मुग़लों का डटकर सामना किया, वहीं दूसरी ओर गरीबों को दिल खोलकर दान भी दिया।

शब्दार्थ :

1. दुंदुभि=नगाड़ा । भोज=उज्जयिनी के प्रसिद्ध दानी महाराजा भोज। गरीबनेवाज़=गरीबों पर कृपा करने वाले।

2. साजी=सजाकर। चतुरंग=रथ, हाथी, घोड़े और पैदलों की चतुरंगिणी सेना । सरजा=सर्वशिरोमणि (यह उपाधि अहमदनगर के बादशाह ने शिवाजी के पूर्वज मालोजी को दी थी । भूषण शिवाजी महाराज को इसी नाम से पुकारते थे ।), भनत=कहते हैं । नाद=आवाज़ । बिहद=बेहद । गैबरन=श्रेष्ठ हाथियों, मतवाले हाथियों । रलत=मिलता है, मिलकर बहता है । ऐल=समूह (यहाँ सेना) । फैल=फैलने से । खैल–भैल=खलबली । खलक=संसार । गैल=मार्ग । ठेल–पेल=धक्कमधक्का । सैल=पहाड़ । उसलत=उखड़ते हैं । तरनि=सूर्य । धुरिधारा=धूल का समूह । थारा=थाली । पारावार=समुद्र। हलत=हिलता।

3. पीरी=पीली । हुन्नै=मुहरें, अशर्फियाँ , सिक्के । सुबरन=(1) स्वर्ण (2) सु + वर्ण=सुन्दर अक्षर अर्थात् छंद। परखि=चुनचुनकर। लाख=(1) एक प्रकार का प्रसिद्ध लाल पदार्थ जो पीपल आदि के पेड़ों की टहनियों पर कई प्रकार के कीड़ों से बनता है। इसकी चूड़ियाँ भी बनती हैं। (2) सौ हज़ार की संख्या, लाख रुपये। रुखन=वृक्षों से । हाथी देत हैं=(1) हाथ मिलाते हैं, (2) हाथी दान करते हैं।

4. घोर=बड़ा । मंदर=मंदिर, महल । मंदर=पर्वत । कंद मूल=बढ़िया मिठाई । कंदमूल=गाजर तथा मूली आदि । तीन बेर=तीन बार । तीन बेर=बेरी के तीन बेर । भूषन=ज़ेवरों से । भूषन=भूख से । बिजन=पंखा । बिजन=निर्जन स्थल, जंगल । ते=वे । वे=अब । नगन जड़ाती = गहनों में नग जड़वाती थीं । नगन जड़ाती=नग्न होने के कारण जाड़े में मरती हैं ।

3–मैथिलीशरण गुप्त

स्वातंत्र्योत्तर कालीन राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई. में उत्तर प्रदेश के झाँसी के चिरगाँव में हुआ था । उन्होंने घर पर ही हिंदी, बंगला, संस्कृत, मराठी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं का अध्ययन किया था । उनकी कविताओं में राष्ट्रीयता के साथ मानवता की भावना की झलक भी मिलती है । उन्होंने कई पौराणिक कथाओं के उपेक्षित पात्रों को लेकर महाकाव्य एवं खंडकाव्यों की रचना की है । 'साकेत' उनका प्रसिद्ध महाकाव्य है । वे 1952–1964 तक राज्य सभा के सदस्य रहे । भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया था । 'साकेत', 'यशोधरा', 'जयद्रथ वध', 'पंचवटी', 'नहुष' आदि उनकी श्रेष्ठ काव्य कृतियाँ हैं । सन् 1964 ई. में उनका निधन हुआ।

प्रस्तुत कवितांश 'शकुंतला' खंडकाव्य से चयनित है। यहाँ पर उस घटना का वर्णन किया गया है जब राजा दुष्यंत की याद में खोयी हुई शकुन्तला को दुर्वासा मुनि के

आगमन की सुध नहीं होती जिसके फलस्वरुप क्रुद्ध होकर मुनि शकुन्तला को श्राप दे देते हैं।

शब्दार्थ :

चित=मन । विख्यात=प्रसिद्ध । दैवात्=अकस्मात्, दैवयोग से। मार्तण्डोपम=सूर्य के समान। वक्त्रमण्डल=मुखमण्डल । दीर्घश्मश्रु=लंबी दाड़ी वाला। केश=बाल। सित=सफेद। सर्वदा= हमेशा । तेजोमयी=कांति से भरा हुआ । निश्चल=जो अपने स्थान से न हिले । बाला=कन्या । तन्द्रा=वह अवस्था जो पूरी नींद आने के आरंभ में होती है। खिन्न=नाराज़। रुष्ट=क्रोधित। वृथा=व्यर्थ। कर्ण=कान। पसार=फैलाकर। पाणि=हाथ। रुक्ष=रुखा। निरी=एकदम, बिल्कुल। उपज=उत्पन्न। निमग्न=डूबा हुआ। लेखा=गणना, परवाह। तव=तुम्हारा। प्रमत्त=पागल, जिसकी बुद्धि ठिकाने पर न हो। अत्युग्रता=प्रचंडता से। रता=अनुरक्त, मग्न। चकोरी=एक पक्षी जो चन्द्रमा से प्यार करता है। सुध=स्मृति, याद। मुद्रिका=मोहर छाप वाली अँगूठी। निरख=देखकर। उद्भ्रान्त=भूला हुआ।

4–पं अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

हिंदी साहित्य के द्विवेदी युग के प्रसिद्ध कवि पं.अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म उत्तर प्रदेश के निज़ामाबाद जिले में तमसा नदी के तट पर सन् 1865 ई. में

हुआ था। 'हरिऔध' बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। उन्होंने अनेक मौलिक ग्रन्थ लिखे हैं । वे हिंदी, ब्रज, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं के विद्वान थे । उनकी कविताओं में अतीत का बाह्य चित्रण, वर्तमान को समझाने की क्षमता, भविष्य के लिए अलौकिक सन्देश आदि बातें पाई जाती हैं । 'वैदेहि वनवास', 'ठेठ हिंदी का ठाठ', 'चोखे चौपदे', 'चुभते–चौपदे', आदि उनकी श्रेष्ठ कृतियाँ हैं । सन् 1945 ई. में उनका निधन हुआ।

'आँसू' हृदय की छिपी हुई व्यथा को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है । ऐसे ही एक अवसर पर कवि की कल्पना को उड़ान भरते हुए यहाँ हम देख सकते हैं जहाँ पर 'आँसू' की तुलना कई दृष्टान्तों के द्वारा की जाती है । इसमें कवि का आँसू के साथ संवाद दृष्टव्य है ।

शब्दार्थ :

ढलकता=गिरना । रतन=रत्न । अरमान=इच्छा, चाह । जिगर=मन । आन=मर्यादा । सितम= अनर्थ, अत्याचार, ज़ुल्म।

5–रामेश्वर दयाल दुबे

21 जून सन् 1908 मैनपुरी (उ.प्र) के हिंदूपुर गाँव में जन्मे श्री रामेश्वर दयाल दुबे हिंदी में परास्नातक उत्तमा

(साहित्य रत्न) परीक्षा उत्तीर्ण कर राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन की प्रेरणा से 1936 में वर्धा गए और वहाँ उन्होंने गाँधी जी की अध्यक्षता में गठित हिंदी प्रचार समिति से जुड़कर काका कालेलकर के संरक्षत्व में पाँच वर्ष तक कार्य किया। सन् 1942 में जब राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का गठन हुआ तब उससे जुड़कर सहायक मंत्री और परीक्षा मंत्री के रुप में लगभग 40 वर्षों तक हिन्दीतर प्रदेशों में निरन्तर प्रवास करते हुए हिंदी की अखण्ड सेवा की। देश के तत्कालीन श्रेष्ठ साहित्यकारों से उनके निकट संबंध बने। बाल साहित्य में उनकी 20 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उनका हिन्दी गीत "भारत जननी–एक · दय हो, एक राष्ट्र भाषा हिन्दी में कोटि–कोटि जनता की जय हो", करोड़ों हिन्दी प्रेमियों का कंठहार बना। 24 जनवरी सन् 2011 को उनका स्वर्गवास हो गया।

प्रस्तुत कविता में कवि ने चित्रकूट पर्वत की प्रकृति का वर्णन किया है। यह कवितांश 'चित्रकूट' खण्डकाव्य से लिया गया है। श्री राम अपने भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ पिता के वचन पालन के लिए वनवास जाते हैं। जैसे ही श्री राम, लक्ष्मण और सीता चित्रकूट पर्वत के समीप पँहुचते हैं, वैसे ही चित्रकूट के वातावरण में आनंद छा जाता है। प्रकृति की सुंदरता देखते ही बनती है। ऐसे सुन्दर और मनोहर दृश्यों का वर्णन इस कविता में किया गया है।

शब्दार्थ :

मुकुलित=अर्द्ध विकसित, अर्द्ध खिली हुई। चहक=पक्षियों का मधुर स्वर (आवाज़)। खग= पक्षी । बावली=पगली । लपक=झपटना, टूट पड़ना | मंदाकिनी=नदी का नाम । लहरियाँ=तरंगें । सफरियाँ=छोटी यात्राएँ । कामदगिरी=पर्वत का नाम । बाट जोहना=राह देखना । वारिद= बादल । सिहर=कंपन । सुरभि=खुशबू, महक । कीर=तोता । क्षितिज=जहाँ पर आकाश और धरती के मिलने का आभास होता है । श्यामघन=काला बादल ।

6–रामधारी सिंह 'दिनकर'

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार प्रांत के बेगूसराय जिले के सिमारिया गाँव में 23 सितंबर सन् 1908 ई. में हुआ । इनके पिता एक साधारण किसान थे । बचपन में ही पिता की मृत्यु हो गई । माँ ने ही इनका पालन–पोषण किया । बचपन से ही मेधावी छात्र रहे । इन्होंने बी.ए. आनर्स की परीक्षा पटना विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की । कवि होते हुए भी इनकी गद्य लेखन में भी विशेष रुचि रही । इनकी रचनाओं में 'मिट्टी की ओर', 'अर्द्धनारीश्वर', 'वेणुवन', 'रेती के फूल', 'कुरुक्षेत्र' तथा 'उर्वशी' आदि उल्लेखनीय हैं । इनको 'उर्वशी' काव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सुशोभित किया गया । इन्हें पद्मभूषण की उपाधि से भी अलंकृत किया गया । इनका निधन 24 अप्रैल 1974

में हुआ।

शब्दार्थ :

नित=प्रतिदिन। आहत हो=चोट पहुँचना। छलनी=घायल। काया=शरीर। अगनित=असंख्य।

7–श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

बीसवीं शताब्दी में वीर भाव की एकैक कवयित्री के रुप में चिरस्मरणीय श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म इलाहाबाद में प्रयाग के सम्भ्रान्त क्षत्रिय कुल में सन् 1904 में हुआ। पति ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ सुभद्रा जी ने राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लिया था। इस हेतु उन्होंन कॉलेज की पढ़ाई को भी अधूरा छोड़ दिया था। 'कर्मवीर' पत्रिका के संपादक तथा राष्ट्रीयता के गायक माखनलाल चतुर्वेदी के प्रोत्साहन से सुभद्राकुमारी की प्रतिभा निखर उठी। राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लेने के परिणामस्वरुप सुभद्रा जी कई बार जेल भी गईं थीं। देश के स्वतन्त्र होने पर वे मध्यप्रदेश के धारासभा की सदस्या रहीं। दुर्भाग्यवश एक मोटर दुर्घटना से सन् 1948 में उनका देहान्त हो गया।

यद्यपि सुभद्राकुमारी ने वात्सल्य एवं दाम्पत्य प्रेम से संबन्धित कविताएँ भी यथेष्ट मात्रा में लिखी हैं, फिर भी उत्कट देशानुराग व राष्ट्रभक्ति के गीतों की रचना में इन्हें अधिक सफलता मिली है। 'झाँसी की रानी', 'जलियाँवाला

बाग', 'वीरों का कैसा हो वसन्त' जैसी कविताओं में कवयित्री की ओजस्वर्ण और स्फूर्तिदायक भाषा द्वारा भारतीय विगत शौर्य के चित्र प्रखर हो उठे हैं। 'मुकुल', 'त्रिधारा', 'बुन्देलों हरबोलों के मुँह' आदि में सुभद्राकुमारी की कविताएँ संगृहित हैं। 'बिखरे मोती', 'उन्मादिनी' और 'सीधे–सादे चित्र' इनकी कहानियों के संग्रह हैं। 'मुकुल' काव्य–संग्रह को साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की ओर से 'सेक्सरिया पुरस्कार' प्रदान किया गया था। सुभद्राकुमारी जी ने बहुत कम लिखा है। परन्तु अनुभूति की सादगी व अभिव्यक्ति की सहजता के कारण राष्ट्रीय धारा के काव्य–क्षेत्र में इनका स्थान अप्रतिम माना गया है।

जलियाँवाला बाग की वारदात भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास की अत्यन्त दर्दनाक घटना है। अंग्रेज़ों की दमननीति के फलस्वरुप इस भीषण काण्ड में अनगिनत भारतीय सेनानी और देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति दी। बालक–वृद्ध, स्त्री–पुरुष का अन्तर भूलकर आज़ादी की बलिवेदी पर शहीद होनेवालों के प्रति सुभद्रा जी की गौरव भावना इस कविता में अभिव्यक्त हुई है। सुभद्रा जी वसन्त ऋतु से प्रार्थना करती हैं कि उन शहीदों की स्मृति में श्रद्धा के फूल अर्पित किये जाएँ। वसन्त से उनका अनुरोध है कि वह मन्द गति से आए ताकि इस शोक–स्थल की शान्ति–भंग न हो सके।

कविता की शैली सरल और सरस है । वीर–भाव व्यंजक इस कविता में शब्दों के वाग्विलास की अपेक्षा एक पवित्र करुणाजनक संवेदना का सहज–स्वाभाविक प्रकाशन हुआ है । कविता की भाषा भी भावानुकूल, आडम्बरहीन, प्राँजल और प्रसादगुण युक्त है ।

शब्दार्थ :

काक=कौआ, कागा । कंटक–कुल=काँटों का समूह । शुष्क=सूखा, नीरस । झुलसना=आग से तपना । सना=भीगा । ऋतुराज=वसन्त ऋतु । उपहार–भाव=भेंट के रुप में । दरसाना = दिखाना, प्रकट करना । छिन्न होना=बिखर जाना, तितर–बितर हो जाना ।

8–डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन'

'हालावाद' के जनक हरिवंशराय बच्चन जी का जन्म सन् 1907 ई. में प्रयाग में हुआ । उनकी शिक्षा–दीक्षा प्रयाग में हुई । प्रयाग विश्वविद्यालय से उन्होंने अंग्रेज़ी में एम.ए. किया तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग में प्राध्यापक रहे । 'आकाशवाणी' तथा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय से सम्बद्ध रहे । संसद सदस्य भी मनोनीत किए गए। अध्ययन काल में वे गाँधी जी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित हुए थे । उनका निधन 18 जनवरी सन् 2003 में हुआ ।

'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशा निमंत्रण', 'एकांत संगीत', 'आकुल अंतर', 'मिलन–यामिनी', 'खादी के फूल', 'सूत की माला', 'आरती और अंगारे' आदि उनके प्रमुख काव्य ग्रंथ हैं।

प्रस्तुत कविता "पथ की पहचान" का मूल भाव यह है कि सफल जीवन - यापन के लिए मनुष्य को साहस के साथ जीवन - मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए। जीवन की कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए और महापुरुषों से निरंतर प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

शब्दार्थ :

बटोही=यात्री, राहगीर, पथिक | राही=पथिक। पंथ=रास्ता। पग=पैर, कदम। पंथी=राही। सरिता=नदी। गौहर=गुफा। सुमन=फूल। कंटक=काँटे।

9–श्री सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

'अज्ञेय' के नाम से हिन्दी साहित्य में विख्यात कवि का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' है। उनका जन्म 7 मार्च सन् 1911 को देवरिया जिले के कसिया नामक स्थान पर हुआ। बी.एस–सी. करने के बाद उन्होंने एम.ए. अंग्रेज़ी में किया। लेकिन क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आने के कारण पढ़ाई छोड़ दी। जेल की सज़ा पाई। पत्रकारिता

के बाद सेना में भर्ती हो गए। कई वर्षो बाद हिन्दी – साहित्य में आए । वे 'दिनमान' नामक प्रसिद्ध हिन्दी पत्रिका के संपादक भी रहे । उनको "कितनी नावों में कितनी बार" पुस्तक पर भारतीय ज्ञान पीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

'अज्ञेय' जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे । काव्य, उपन्यास एवं कहानी के क्षेत्रों में उनकी प्रतिभा पर्याप्त चमकी है । उनके काव्य ग्रंथों में 'भग्नदूत', 'चिन्ता', 'हरी घास पर क्षणभर', 'बावरा अहेरी', 'आंगन के पार द्वार', अरी ओ करुणा प्रभामय', 'कितनी नावों में कितनी बार' आदि अधिक प्रसिद्ध हैं।

प्रयोगवाद की घोषणा करने वाली प्रथम कृति 'तार-सप्तक' का संपादन उन्होंने ही किया । बाद के 'सप्तकों', के सम्पादक भी अज्ञेय जी रहे । उन्होंने हिन्दी कविता को एक नई दिशा दी है। उनका निधन 4 अप्रैल सन् 1987 में हुआ।

अनादिकाल से ताकतवर समाज के ठेकेदार गरीबों का, कमज़ोरों का शोषण करते ही चले आ रहे हैं । शोषित वर्ग मूक प्राणी बनकर इनके अत्याचारों को सहता आ रहा है। कवि 'अज्ञेय' इस शोषित वर्ग की आवाज़ बनकर उनका प्रतिनिधित्व करते हुए यहाँ पर समाज के शोषक वर्ग को ललकारने का साहस करते हैं।

शब्दार्थ :

अप्रतिहत=न रुका हुआ, अपराजित । आव्हान=बुलाना, निमंत्रण । खानों में=वह स्थान जहाँ धातु, पत्थर आदि को खोदकर निकाले जाते हैं । ठठरी=अस्थिपंजर । धान=अनाज । नि:शक्तों =कमज़ोर । वेदी=वह भूमि जो किसी कार्य के लिए बनाकर तैयार की गई हो । लोलुपता= लालच । उद्यान=बगीचा (समाज रुपी बगीचा) । सत्ताधारी=जिसके हाथ में अधिकार हो । चिर=बहुत दिनों का । रिपु=शत्रु । प्रतिद्वंद्वी=विरोधी ।

पारिभाषिक शब्दावली

1.	Analysis	: विश्लेषण
2.	Arrival	: आगमन
3.	Aroma	: सुगंध
4.	Blacksmith	: लोहार
5.	Balance	: संतुलन
6.	Bridge	: पुल, सेतु
7.	Camphor	: कपूर
8.	Chariot	: रथ
9.	Curriculum	: पाठ्यक्रम
10.	Decentralisation	: विकेंद्रीयकरण
11.	Den	: गुफा, कन्दरा
12.	Dictionary	: शब्दकोश
13.	Encyclopedia	: विश्वकोश
14.	Era	: युग, संवत्, सन, काल
15.	Export	: निर्यात
16.	Fanatic	: कट्टरपंथी, धर्मांध
17.	Futile	: व्यर्थ, निरर्थक
18.	Foam	: झाग, फेन
19.	Gardener	: माली, बागबान
20.	Gigantic	: विशाल काय, दैत्याकार

21. Gem : रत्न, मणि
22. Glacier : हिमनद, हिमानी
23. Hindrance : बाधा, रुकावट
24. Honeycomb : मधुमक्खी का छत्ता
25. Indefinite : अनिश्चित
26. Import : आयात
27. Institution : संस्था
28. Kerosene : मिट्टी का तेल, घासलेट
29. Leather : चमड़े
30. Literacy : साक्षरता
31. Livelihood : आजीविका
32. Medieval : मध्यकालीन
33. Monument : स्मारक
34. Mortgage : गिरवी
35. Neutral : तटस्थ, निष्पक्ष
36. Nightingale : बुलबुल
37. Optimism : आशावाद
38. Opaque : अपारदर्शी
39. Option : विकल्प
40. Philosophy : दर्शनशास्त्र, तर्क विज्ञान
41. Print : मुद्रण

42.	Post Office	: डाकघर
43.	Sequence	: अनुक्रम
44.	Solar	: सौर
45.	Symbolic	: प्रतीकात्मक
46.	Translator	: अनुवादक
47.	Urban	: शहरी, नगरीय
48.	Utilisation	: उपयोग
49.	Width	: चौड़ाई
50.	Zoo	: चिड़ियाघर